नाद-नर्तन
जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूजिक

UGC-CARE Listed ISSN: 2349-4654
वर्ष : 13, अंक : 1, जनवरी 2025

बड़ौदा के छापाकला स्टूडियो का भारतीय कलाजगत में महत्वपूर्ण योगदान

चंद्रशेखर वसंतराव वाघमारे
शोधार्थी (ललित कला विभाग)
राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज नागपुर विश्वविद्यालय नागपुर

डॉ. शशिकांत शेषराव रेवडे
(पर्यवेक्षक) प्राचार्य, श्री कला महाविद्यालय
अंजी, वर्धा

सार-संक्षेप

छापाकला एक अद्‌भुत कला है, इस माध्यम में एक छवि की कई प्रतिलिपि बनाने के लिए विभिन्न तकनीकी विद्याओं का उपयोग किया जाता है। यह शोध पत्र विशेष रूप से बड़ौदा के छापा स्टूडियो के महत्त्वपूर्ण भूमिकाओं के अध्ययन पर आधारित हैं, जिसमें फैकल्टी ऑफ फाईन आर्ट ग्राफिक्स स्टूडियो, छाप स्टूडियो, उत्तरायण स्टूडियो, प्रियश्री स्टूडियो, शिमिषा स्टूडियो का समावेश है। स्टूडियो के रचनात्मक वातावरण, अनुभवी मार्गदर्शक, नेटवर्किंग के अवसर और आवश्यक संसाधनों और उपकरणों के कारण इन्हें विशेष बनते हैं। इस शोध पत्र में छापाकला स्टूडियो में पाए जाने वाले महत्त्वपूर्ण गतिविधियाँ जैसे समूह में कार्य करना, पोर्टफोलियो पर कार्य किया जाना, छापाकार्य पर कलाकारों का व्याख्यान का आयोजन किया जाना, प्रिंटिंग प्रेस और अन्य साधान, कार्यस्थान, समय-समय पर छापाकला की प्रदर्शनियों का आयोजन, डिजिटल उपकरणों की रूपरेखा प्रस्तुत की गई है। इसके अलावा स्टूडियो के लिए आवश्यक साधनों में स्टूडियो की प्रकाश व्यवस्था, रचना, काम को सुरक्षित रखने के उपकरण शामिल है। इस शोध पत्र के लिए साहित्य समीक्षा, प्राथमिक डेटा संग्रह और द्वितीय डेटा संग्रह का उपयोग किया गया है। और यह शोध पत्र भविष्य की अगली नई पीढ़ी के छापाकला कलाकारों एवं विद्यार्थियों के लिए उपरोक्त बड़ौदा के छापाकला स्टूडियो की जानकारी महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगी।

मुख्य शब्द : बड़ौदा स्टूडियो योगदान, फैकल्टी ऑफ फाईन आर्ट ग्राफिक्स स्टूडियो, छाप स्टूडियो, उत्तरायण स्टूडियो, प्रियश्री स्टूडियो, शिमिषा स्टूडियो, बड़ौदा प्रिंटमेकिंग, तकनीकी विधाएँ।

शोध-पत्र

अनुसंसाधन क्रियाविध

इस शोध के लिए एक ऐतिहासिक और गुणात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया है। अनुसंसाधन क्रियाविधि के अंतर्गत साहित्य समीक्षा, प्राथमिक डेटा संग्रह और द्वितीयक डेटा संग्रह का उपयोग किया गया है। साहित्य समीक्षा के माध्यम से बड़ौदा के विभिन्न छापाकला स्टूडियो और उनकी तकनीकी विधाओं पर पहले से उपलब्ध शोध एवं जानकारियों का अध्ययन किया गया। प्राथमिक डेटा संग्रह के लिए बड़ौदा के छापा स्टूडियो के कलाकारों, मार्गदर्शकों, और विद्यार्थियों से साक्षात्कार लिए गए और स्टूडियो में चल रही गतिविधियों का प्रत्यक्ष अवलोकन किया गया। द्वितीयक डेटा संग्रह के अंतर्गत स्टूडियो की उपलब्ध संसाधनों, उपकरणों और प्रिंटिंग तकनीकों से संबंधित दस्तावेजों और रिपोर्ट्स का विश्लेषण किया गया।

उद्देश्य

बड़ौदा के छापाकला स्टूडियो का ऐतिहासिक एवं कलात्मक महत्त्व को समझाया गया हैं। बड़ौदा के छापाकला स्टूडियो द्वारा भारतीय कला जगत में किए गए योगदान का विश्लेषण किया गया हैं।

मूल आलेख

भारतीय कला इतिहास में 20वीं शताब्दी का कालखंड अत्यधिक महत्त्वपूर्ण रहा है, जिसमें बड़ौदा शहर से कई अद्वितीय कलाकारों ने कला जगत में अभूतपूर्व योगदान दिया है। बड़ौदा में छापाकला (प्रिंटमेकिंग) का इतिहास अत्यंत समृद्ध और रचनात्मकता से परिपूर्ण रहा है। विविध कलात्मक रूपों में, छापाकला या प्रिंटमेकिंग एक बहुआयामी और गतिशील कला शैली के रूप में उभरकर सामने आई है। यह कला रूप एक ही छवि की कई प्रतियों को बनाने की विभिन्न

तकनीकों को समाहित करता है और आज इसे हर वस्तु में अप्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है। छापाकला का भारतीय कला में विशेष स्थान है। उदाहरणस्वरूप, राजा रवि वर्मा के ओलियोग्राफी चित्रों ने देवताओं के मूर्त स्वरूप को आम जनता तक पहुँचाने का सरल और सुलभ माध्यम प्रदान किया। प्रिंटमेकिंग के माध्यम से, इस कला ने जनमानस में धार्मिक और सांस्कृतिक धारणाओं को गहराई से प्रभावित किया।

चित्र क्र. 1 फैकल्टी ऑफ फाईन आर्ट

बड़ौदा, जिसे वडोदरा के नाम से भी जाना जाता है, अपने समृद्ध सांस्कृतिक और कलात्मक इतिहास के लिए प्रसिद्ध है। विशेष रूप से महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय के ललित कला संकाय (चित्र क्र.1) ने प्रिंटमेकिंग के क्षेत्र में अत्यधिक महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। बड़ौदा के छापाकला स्टूडियो न केवल स्थानीय कलाकारों को बल्कि राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान प्राप्त करने वाले कई प्रतिभाशाली कलाकारों को भी प्रेरित कर रहा है। छापाकला स्टूडियो, कलाकारों के शैक्षणिक और पेशेवर जीवन के बीच एक महत्त्वपूर्ण सेतु का कार्य कर रहा हैं, खासकर उन कलाकारों के लिए जो कॉलेज से अपने पेशेवर करियर की ओर अग्रसर हैं। इन स्टूडियो में आवश्यक उपकरण, पर्याप्त जगह और अनुकूल माहौल के साथ पर्याप्त साधन है, जो कलाकारों को अपनी रचनात्मकता को निखारने और पेशेवर दुनिया में आत्मविश्वास के साथ कदम रखने के लिए प्रेरित करता है। विशेषकर बड़ौदा में, छापाकला स्टूडियो का महत्त्व कला के विकास और कलाकारों के व्यक्तिगत व सामूहिक विकास में अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। यह शहर छापाकला केंद्र के रूप में अपनी पहचान बना चुका है, जहाँ से कलाकारों की नई पीढ़ी ने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंच पर अपनी कला की पहचान बनाई है। (Mukherjee)

बड़ौदा का ग्राफिक कला विभाग

बड़ौदा के महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय के ललित कला संकाय में सन 1950 में ग्राफिक कला विभाग की स्थापना की गई, जहाँ प्रिंटमेकिंग को सहायक पाठ्यक्रम के रूप में पढ़ाया जाने लगा। इस माध्यम को एक रचनात्मक और अभिनव कला के रूप में मान्यता दी गई और छात्रों को विषयवस्तु व तकनीकों के चयन में पूरी स्वतंत्रता दी गई। इस रचनात्मक आजादी ने छात्रों के बीच आपसी आदान-प्रदान और बातचीत को बढ़ावा दिया, जिससे नए विचारों और शैलियों का विकास हुआ।

चित्र क्र : 2 विशेष कला के उपक्रम

विभाग की शुरूआत में छपाई (रिलीफ प्रिंटिंग) और लिथोग्राफी की सुविधाएँ प्रदान की गईं। वार्षिक ललित कला मेलों में प्रिंटमेकिंग का प्रभावी उपयोग करते हुए पोर्टफोलियो, कैलेंडर, कार्ड और पुस्तकों की छपाई की जाने लगी। सन 1960 के दशक के अंत तक इंटैग्लियो प्रिंटमेकिंग की प्रक्रिया को भी विभाग में शामिल किया गया। इसके बाद फोटोग्राफी और पेपरमेकिंग जैसे नए माध्यमों को भी पाठ्यक्रम में जोड़ा गया, जिससे छात्रों के लिए कलात्मक अभिव्यक्ति के अवसर और भी व्यापक हो गए। सन 1971 में बड़ौदा के ग्राफिक कला विभाग ने प्रिंटमेकिंग में पोस्ट ग्रेजुएट डिग्रि और पोस्ट डिप्लोमा प्रदान करना शुरू किया, जो भारत में इस स्तर की डिग्री की पेशकश करने वाला पहली संस्थान हैं। यह एक महत्त्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुआ, जिसने प्रिंटमेकिंग के क्षेत्र में नए मानक स्थापित किए और इसे अधिक गंभीर और व्यवसाइक रूप में देखा जाने लगा।

बड़ौदा के कई छात्रों और शिक्षकों को प्रतिष्ठित विदेशी संस्थानों में अध्ययन करने के लिए अनुदान और छात्रवृत्तियाँ के अवसर मिले, और वे अपने नए अनुभवों और ज्ञान को साझा करने के उद्देश्य से भारत लौट आए, जिससे बड़ौदा के प्रिंटमेकिंग परिदृश्य को समृद्ध की दिशा की ओर अग्रसर हुए। बड़ौदा में प्रशिक्षित कई छापाकलाकार/ प्रिंटमेकर्स ने अन्य संस्थानों में प्रिंटमेकिंग विभागों की स्थापना की और इस माध्यम को आगे बढ़ाने के लिए छात्रों को प्रेरित किया। इस क्षेत्र में पी.डी. धूमाल की भूमिका बेहद महत्त्वपूर्ण रही। धूमाल का अपने छात्रों पर गहरा प्रभाव था और उन्होंने प्रिंटमेकिंग के प्रति छात्रों में रुचि पैदा करने के लिए अद्वितीय योगदान दिया। उनकी ऊर्जा, उत्साह और सहयोगात्मक दृष्टिकोण ने विभाग को एक जीवंत और सृजनात्मक स्थल में परिवर्तित कर दिया। उन्होंने शिबीरों (वर्कशॉप) का आयोजन किया, प्रिंट पोर्टफोलियो और सचित्र पुस्तकों का निर्माण किया और कागज निर्माण के प्रयोग किए,

जिससे कलाकारों और जनता के बीच कला संवाद और जुड़ाव के नए अवसर सृजित हुए। के.जी. सुब्रमण्यम के शब्दों में, पी.डी. धूमल ने कई भूमिकाएँ निभाईं–''एक शांत कलाकार से वह एक साधन-संपन्न शिक्षक बन गए और फिर साधन-संपन्न शिक्षक से युवा कलाकारों और व्यापक समाज के बीच एक बहु-पक्षीय मध्यस्थ बन गए।धूमाल की यह बहुमुखी क्षमता और उनके नवाचार बड़ौदा के प्रिंटमेकिंग विभाग को संगठित और प्रेरित करने में अनुकरणीय रहे हैं।'' (Subramanyam)

बड़ौदा का ग्राफिक कला विभाग छापाकला को बढ़ावा देने में न केवल अग्रणी रहा है, बल्कि उसने देश के अन्य संस्थानों के लिए एक मानक स्थापित किया है। ग्राफिक कला विभाग ने छापाकला के उच्चतम स्तर को प्राप्त करने के लिए निरंतर नवाचार और उत्कृष्टता की दिशा में काम किया है, जिससे यह प्रिंटमेकिंग के क्षेत्र में एक बेंचमार्क बन चुका है। छापाकला को समृद्ध करने और कलाकारों को इस क्षेत्र में प्रशिक्षित करने के लिए कई महत्त्वपूर्ण कलाकार शिविर और कार्यशालाएँ आयोजित की गईं। इनमें 1986 में पॉल लिंग्रेन द्वारा आयोजित इंटैग्लियो कार्यशाला, 1989 में मल्टीपल प्लेट कलर इंटैग्लियो कार्यशाला, 1991 में टिम मारा की कार्यशाला, और 1994 में जॉन बेबकॉक द्वारा आयोजित पेपरमेकिंग कार्यशाला शामिल हैं। इन कार्यशालाओं ने छापाकला की विविध तकनीकों को छात्रों और पेशेवर कलाकारों तक पहुँचाया और उन्हें नवीनतम रचनात्मक प्रवृत्तियों से परिचित कराया। बड़ौदा में छापाकला गतिविधियाँ समय के साथ और व्यापक रूप से विकसित हुई हैं। व्यक्तिगत छापाकला स्टूडियो की स्थापना ने छापा कलाकारों को स्वतंत्र रूप से अपनी कला को अभ्यास करने का अवसर प्रदान किया। इसके अलावा, कुछ पेशेवर प्रिंटमेकिंग स्टूडियो भी स्थापित किए गए, जिन्होंने अभ्यासक कलाकारों को आवश्यक सुविधाएँ और संसाधन उपलब्ध कराए, जिससे उनकी कलात्मक अभिव्यक्ति और उत्पादन में गुणवत्ता सुनिश्चित की जा सके। इन कार्यशालाओं और स्टूडियो के माध्यम से बड़ौदा ने छापाकला को एक सशक्त माध्यम के रूप में उभारा और भारतीय कला जगत में इसकी एक विशेष पहचान बनाई। (Mukhaerjee)

उत्तरायण आर्ट स्टूडियो

उत्तरायण आर्ट स्टूडियो बड़ोदा (वडोदरा), गुजरात का एक प्रतिष्ठित कला और रचनात्मकता केंद्र है, जिसे समकालीन भारतीय कला के क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। यह स्टूडियो न केवल राष्ट्रीय बल्कि अंतर्राष्ट्रीय कलाकारों के लिए भी एक प्रमुख स्थल है, जहाँ विभिन्न प्रकार की कलात्मक गतिविधियाँ, कार्यशालाएं, प्रदर्शनियाँ और कलाकारों के रेसिडेंसी कार्यक्रम आयोजित किया जाता हैं। इसकी स्थापना का मुख्य उद्देश्य कलाकारों को मंच प्रदान करना था, जहाँ वे स्वतंत्र रूप से अपनी कला का विकास और नवाचार कर सकें। उत्तरायण न केवल चित्रकला और मूर्तिकला जैसे पारंपरिक माध्यमों को प्रोत्साहित करता है, बल्कि फोटोग्राफी, डिजिटल आर्ट, मल्टीमीडिया और इंस्टॉलेशन आर्ट जैसे समकालीन माध्यमों पर भी विशेष ध्यान देता है।

चित्र क्र 3 उत्तरायण रेसिडेंसी परिसर

स्टूडियो की संरचना और सुविधाएँ अत्याधुनिक हैं, जिसमें कलाकारों के लिए अलग-अलग स्टूडियो, गैलरी (दीर्घा) और वर्कशॉप जगह शामिल हैं। यहाँ के रेसिडेंसी कार्यक्रम कलाकारों को शांति और नवीनता से अपने काम पर ध्यान केंद्रित करने का अवसर दिया जा रहा हैं। उत्तरायण का वातावरण कलाकारों के लिए एक अनुकूल और प्राकृतिक स्थान प्रदान करता है, जहाँ वे अपने विचारों को सृजनात्मक रूप में ढाल सकते हैं। इसके अलावा, स्टूडियो में नियमित रूप से कला प्रदर्शनियों, कार्यशालाओं और सेमिनारों का आयोजन किया जाता है, जो कलाकारों और कला के छात्रों के लिए बहुत लाभकारी होते हैं।

चित्र 4 उत्तरायण आर्ट स्टूडियो जासपुर बड़ोदा

उत्तरायण का अंतर्राष्ट्रीय जुड़ाव इसे और भी विशेष बनाता है, जहाँ विदेशी कलाकार भारतीय कलाकारों के साथ मिलकर कला का आदान-प्रदान करते हैं और सांस्कृतिक संवाद स्थापित करते हैं। यह वैश्विक स्तर पर भारतीय कला के प्रसार में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उत्तरायण आर्ट स्टूडियो भारतीय कला और संस्कृति के उत्थान में एक प्रेरणास्रोत के रूप में उभरा है, जो कला जगत में नए विचारों और नवाचारों को बढ़ावा देता है, साथ ही भारत की वैश्विक पहचान को सशक्त करता है। उत्तरायण युवा महत्त्वाकांक्षी प्रिंट निर्माताओं को प्रिंटमेकिंग स्टूडियो में अपना शैक्षणिक चरण पूरा करने के बाद प्रिंटमेकिंग में अपना काम जारी रखने के लिए छात्रवृत्ति और प्रायोजन प्रदान करके प्रोत्साहित करता है। (Uttarayan Art Foumdation - Space118 Art Foundation)

छाप स्टूडियो

1999 में बड़ौदा (वडोदरा), गुजरात में स्थापित हुआ, भारतीय छापाकला के क्षेत्र में एक अग्रणी और महत्त्वपूर्ण सामूहिक स्टूडियो है। यह स्टूडियो गुलाम मोहम्मद शेख, विजय बागोडी, कविता शाह सहित प्रमुख भारतीय कलाकारों के प्रयासों का परिणाम है, अब तक रेसिडेंसी कार्यक्रम में 40 से अधिक अंतरराष्ट्रीय कलाकारों ने भाग ले चुके हैं। यह एक स्थापित प्रिंट स्टूडियो है, जहाँ एचिंग, ड्राय पॉइंट, लीनो-कट, वुडकट और मोनो-प्रिंट जैसी तकनीकों के लिए कलाकारों को रेसिडेंसी की सुविधाएँ मिलती हैं। छाप स्टूडियो का उद्देश मुख्य रूप से प्रिंट पोर्टफोलियो बनाने और प्रिंटमेकिंग तकनीकों पर कार्यशालाएँ आयोजन के साथ राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रिंटमेकिंग तकनीकों के प्रचार-प्रसार और प्रदर्शनी आयोजित किया जाता है। छापाकला ज्ञान को साझा करने के लिए यह विभिन्न कार्यक्रमों, सेमिनारों और कैम्पों का आयोजन भी करता है। छाप स्टूडियो एक गैर-लाभकारी संगठन है, जिसका उद्देश्य नए और अनुभवी कलाकारों के लिए मंच प्रदान करना और भारत में छापाकला को बढ़ावा देना है।

चित्र 5 : छाप स्टूडियो बड़ोदा

इसकी स्थापना का प्रमुख लक्ष्य प्रिंटमेकिंग की समृद्ध परंपराओं को संरक्षित करते हुए उभरते कलाकारों को समर्थन देना था। हालांकि, शुरूआत में स्टूडियो को वित्तीय चुनौतियों का सामना करना पड़ा और प्रिंटमेकिंग उपकरणों की कमी जैसी समस्याएँ हुई, लेकिन इसके बावजूद, कार्यशालाओं और राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय कलाकारों को आमंत्रित करके इन चुनौतियों को दूर किया गया। छाप स्टूडियो ने छापाकला को भारत में न केवल प्रोत्साहित किया बल्कि इसे वैश्विक पहचान दिलाने में भी सफल रहा। स्टूडियो की गतिविधियों में शैक्षणिक संस्थानों के साथ सहयोग करना, प्रमुख प्रिंट प्रदर्शनियों में राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तरपर आयजन किया गया है। प्रमुख प्रिंट प्रदर्शनि श्गंजिफाश का आयोजन और गैर-रसायनिक प्रिंटमेकिंग प्रक्रियाओं को अपनाना शामिल है। आज, छाप स्टूडियो छापाकला की पारंपरिक विधियों (तकनीकों) के पर्यावरण के प्रति जागरूकता पर भी ध्यान दे रहा है। यह प्रिंटमेकिंग कला को सुरक्षित और टिकाऊ बनाने की दिशा में कार्यरत है। अपने सीमित संसाधनों के बावजूद, छाप स्टूडियो ने प्रिंटमेकिंग के क्षेत्र में एक अमूल्य योगदान दिया है और यह कला प्रेमियों के लिए प्रेरणास्रोत बना हुआ है। (shah)

प्रियश्री स्टूडियो

बड़ौदा स्थित प्रियश्री स्टूडियो केवल एक भौतिक कला स्थल नहीं है, बल्कि भारतीय समकालीन कला जगत में एक महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक केंद्र के रूप में प्रतिष्ठित है। इसकी स्थापना 2003 में हुई, परंतु इसकी जड़ें 1980 के दशक में मधु पटोडीया की दूरदर्शिता से जुड़ी हैं, जिन्होंने एमएसयू ललित कला संकाय के कलाकारों के लिए रचनात्मक स्थान की आवश्यकता को महसूस किया। प्रियश्री पटोडीया ने अपनी माँ की इस परिकल्पना को साकार करते हुए इसे एक संपूर्ण कलात्मक मंच के रूप में विकसित किया। यह स्टूडियो युवा और उभरते हुए कलाकारों को न केवल पेंटिंग और प्रिंटमेकिंग जैसी विविध विधाओं के लिए अत्याधुनिक सुविधाएँ प्रदान करता है, बल्कि उन्हें शोध, संवाद और सहयोग के लिए एक सृजनात्मक मंच भी उपलब्ध कराता है। एमएसयू के निकट स्थित होने के कारण यह स्थानीय कला परिदृश्य से जुड़े रहने का एक प्रमुख केंद्र है, जहाँ तीन महीने के कला रेसिडेंसी कार्यक्रमों के माध्यम से ओपन स्टूडियो सत्र और प्रदर्शनों का आयोजन होता है। प्रियश्री पटोडीया की दूरदर्शिता और समर्पण ने इसे एक ऐसा केंद्र बना दिया है जो भारतीय समकालीन कला की समृद्धि और युवा कलाकारों के करियर निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। (Priyasri Studios - Space118 Art Foundation)

शिमीषा आर्ट स्टूडियो

शिमीषा आर्ट स्टूडियो निजामपुरा बड़ोदा के मध्य में स्थित है। स्टूडियो का उद्देश्य केवल एक ऑनलाइन गैलरी के साथ युवा और प्रतिभाशाली कलाकारों के लिए एक महत्त्वपूर्ण मंच प्रदान करता है, जहाँ वे अपनी कला का प्रदर्शन कर सकें। इस प्रयास के पीछे किसी व्यावसायिक स्वार्थ की बजाय कला के प्रति गहरी प्रतिबद्धता और प्रेम की भावना निहित है। शिमीषा आर्ट स्टूडियो एक ऐसी यात्रा पर निकला है जो समान सोच और संवेदनशीलता वाले रचनात्मक व्यक्तित्वों को एक साथ लाने का प्रयास करता है।

भारतीय छापा स्टूडियोः रचना, प्रकाश और साधन सामग्री

भारतीय छापा स्टूडियो रचनात्मकता और तकनीकी उत्कृष्टता का संगम प्रस्तुत करते हैं। इन स्टूडियो में न केवल कला के साधनों की आधुनिक सुविधाएँ उपलब्ध हैं, बल्कि यह कलाकारों के लिए प्रेरणादायक वातावरण भी प्रदान करते हैं। दिल्ली से गढ़ी स्टूडियो, चेन्नई से ललित कला स्टूडियो, भोपाल स्थित भारत भवन, गोवा का डायरेक्टरेट ऑफ आर्ट एंड कल्चर स्टूडियो और उत्तरायण स्टूडियो अपनी उन्नत संरचना और साधन-संपन्नता के लिए प्रसिद्ध हैं।

इन स्टूडियो की प्रकाश व्यवस्था अत्यंत सुनियोजित की गई है, जो कलाकारों की सृजन प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

अत्याधुनिक प्रिंटमेकिंग उपकरणों और कलात्मक वातावरण का यह अद्वितीय संयोजन से कलाकारों के कार्य को सहज और प्रभावी बनाता है।

विशेष रूप से उत्तरायण स्टूडियो की रचना खुले और प्राकृतिक परिवेश के बीच की गई है। हरे-भरे वृक्षों और खुले आसमान के बीच स्थित यह स्थान कला साधना के लिए एक शांत और प्रेरणादायक वातावरण प्रदान करता है। यहाँ न केवल अत्याधुनिक प्रिंटमेकिंग उपकरण उपलब्ध हैं, बल्कि पारंपरिक साधनों की भी व्यवस्था की गई है।

स्टूडियो में लकड़ी, धातु और कागज पर प्रिंटिंग के लिए विशेष प्रेस की सुविधाएँ मौजूद हैं। इसके अतिरिक्त, रंग मिश्रण के उन्नत उपकरण और अन्य आवश्यक सामग्री भी कलाकारों को प्रदान की जाती है, जिससे उनकी सृजन प्रक्रिया निर्बाध रूप से पूरी हो सके। यह स्थान तकनीकी प्रवीणता और पारंपरिक कलात्मकता का एक आदर्श समन्वय प्रस्तुत करता है, जो हर प्रकार के कलात्मक प्रयोगों के लिए उपयुक्त है।

प्रिंटमेकिंग स्टूडियो के सुरक्षा नियम

प्रिंटमेकिंग स्टूडियो में काम करते समय सुरक्षा का विशेष ध्यान रखना आवश्यक है। यहाँ केवल वही विद्यार्थी या व्यावसाईक कलाकार कार्य कर सकते हैं जो प्रिंटमेकिंग कक्षा में नामांकित हैं या जिन्हें फाइन आर्ट्स प्रोफेसर से विशेष अनुमति प्राप्त है। उपकरणों का उपयोग केवल उन्हीं के लिए सीमित है जिनके लिए आपको अनुमति दी गई हो। सुरक्षा उपायों के तहत हमेशा जूते पहनना अनिवार्य है, चप्पल या सैंडल की अनुमति नहीं है। विषैले रसायनों के साथ कार्य करते समय दस्ताने, मास्क या चश्मे का उपयोग आवश्यक है। प्रेस एवं रोलर्स का उपयोग किस तरह करना हैं। एचिंग, लिथोग्राफी, स्क्रीन प्रिंटिंग के दौरान रसायनों के संपर्क से बचने के लिए सुरक्षा किस तरह की जाती है। जिससे प्रिंटमेकिंग स्टूडियो एक सुरक्षित स्थान बनता है बल्कि रचनात्मकता को भी बढ़ावा देता है। बड़ौदा स्टूडियो के व्यावसायिक कलाकार नए विचारों के साथ पारंपरिक तकनीकों का संयोजन करते हुए एक सुरक्षित और रचनात्मक माहौल में काम करते हैं।

परिणाम

शोध में यह पाया गया की, बड़ौदा के छापाकला स्टूडियो ने कलाकारों के लिए कला की विविध तकनीकों का अन्वेषण करने एवं सतत कार्य करने हेतु स्वतंत्र मंच प्रदान किया है, जिससे बड़ोदा छापाकला का विस्तार हुआ। इसके अलावा, इन स्टूडियो ने स्थानीय और अंतर्राष्ट्रीय कलाकारों के लिए एक सहयोगी वातावरण तैयार किया है।

निष्कर्ष

बड़ौदा के छापाकला स्टूडियो कलाकारों के लिए रचनात्मक विकास और पेशेवर अनुभव का अनूठा अवसर प्रदान करते हैं। ये स्टूडियो न केवल विभिन्न प्रिंटमेकिंग तकनीकों का अन्वेषण करने का योग्य स्थान हैं, कला के क्षेत्र में सफलता के लिए आवश्यक कौशल को परिष्कृत करने में भी मदद करते हैं। उच्च गुणवत्ता वाले उपकरणों और संसाधनों तक पहुँच, जो व्यक्तिगत रूप से महंगे हो सकते हैं, इन स्टूडियो में कलाकारों को पेशेवर-स्तर के प्रिंट बनाने की सुविधा मिलती है। इसके अलावा, ये स्टूडियो एक सामुदायिक केंद्र की तरह कार्य करते हैं, जहाँ कलाकार नेटवर्किंग और सहयोग के माध्यम से अपने विचारों का आदान-प्रदान कर सकते हैं, जो उनके रोजगार (करियर) के विकास में सहायक होता है। इन स्टूडियो की उपकरणों एवं मार्गदंशन से कलाकारों को अपने कलात्मक दृष्टिकोण को साकार करने में सहायक होते हैं। बड़ौदा के छापाकला स्टूडियो, अकादमिक शिक्षा और पेशेवर अभ्यास के बीच की खाई को पाटने का काम करते हैं, जिससे हाल के स्नातकों को एक सशक्त मंच मिलता है। यहाँ काम करने वाले कलाकारों की सफलता की कहानियाँ अन्य कलाकारों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनती हैं और इस क्षेत्र के भविष्य के विकास के लिए नए रास्ते खोलती हैं। इस स्टूडियो ने कलाकारों को न केवल काम करने की जगह दी, बल्कि उनकी रचनात्मकता को भी प्रोत्साहित किया। बड़ौदा स्टूडियो की स्थापना के कारण बड़ौदा में काम करने वाले कलाकारों को अपने कला-सृजन के लिए एक उपयुक्त स्थान प्राप्त हुआ है।

बड़ौदा के छापाकला स्टूडियो भारतीय कला जगत में रचनात्मकता और छापाकला तकनीकों के विकास में महत्त्वपूर्ण हैं। इन स्टूडियो ने युवा और पेशेवर कलाकारों को उत्कृष्ट साधनों और सामुदायिक सहयोग के माध्यम से अपनी कला को निखारने का अवसर प्रदान किया है। बड़ौदा के ग्राफिक कला विभाग ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। छाप स्टूडियो और उत्तरायण जैसे स्टूडियो ने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय प्रिंटमेकिंग को नई पहचान दिलाई है।

चित्र सूची

1. फैकल्टी ऑफ फाइन आर्ट्स. महाराजा सयाजीराव यूनिवर्सिटी ऑफ बड़ौदा, msubaroda.ac.in/academics/FFA 20 दिसम्बर 2024 को अभिगम किया गया।
2. चित्र क्र. 2 विशेष कला के उपक्रम, महाराजा सयाजीराव यूनिवर्सिटी ऑफ बड़ौदा, msubaroda.ac.in/academics/FFA/aboutfaculty. 20 दिसम्बर 2024 को अभिगम किया गया।
3. चित्र क्र. 3 उत्तरायण रेसिडेंसी परिसर, 2022, निजी संग्रह।
4. चित्र क्र. 4 उत्तरायण आर्ट स्टूडियो, जासपुर, बड़ौदा, 2022. निजी संग्रह।
5. चित्र क्र. 5 छाप स्टूडियो, बड़ौदा 2021. निजी संग्रह।

संदर्भ सूची

1. Mukherjee, Jayati. "Printmaking Activities in Western India." Lalitkala Akademi New Delhi, vol. 57, p. 96.

2. Mukherjee, Jayati. An Identity in Modern Art Baroda. PhD dissertation, Maharaja Sayajirao University of Baroda, 1998.
3. Priyasri Studios - Space118 Art Foundation. Space118, www.space118.com/mapping-residencies/priyasri-studios/. Accessed 15 Jan. 2025.
4. Shah, Kavita. "About Us | CHHAAP Foundation for Printmaking Trust." CHHAAP Foundation, www.chhaap.org/about-us. Accessed 30 june 2024.
5. Subramanyam, K.G. Anant. Red Earth Gallery, 2013.
6. Uttarayan Art Foundation - Space118 Art Foundation. Space118, www.space118.com/mapping-residencies/uttarayan/. Accessed 30 dec 2024.